# दूसरों को समझने के लिए स्वयं से प्रेम करना ज़रूरी

अगर आप स्वयं से प्रेम नहीं करते तो आप दूसरे से भी नहीं कर सकते। भीड़ में कभी आप देखते हैं कि कोई किसी को प्रेम करता है? क्योंकि उसका कोई अस्तित्व नहीं होता। भीड़ आपको सहारा तो देती है लेकिन आपकी स्वयं की पहचान छीन लेती है। आप हमेशा देखेंगे कि जब कोई दूसरे को मारता है तो वो व्यक्ति अपने से नफरत करता है। क्योंकि स्वयं से प्रेम करने वाला इंसान दूसरे को मार नहीं सकता। हमारे समाज में आत्मविश्वास और आत्मप्रेम नहीं सिखाया जाता। खुद को प्रेम करना यहां बुरा समझा जाता है और लोग इसे आत्म-मुग्धता की संज्ञा देते हैं। याद रखने वाली बात यह है कि हम दूसरे को, सृष्टि को सिर्फ अपनी रोशनी में ही देखने में समर्थ हैं। अपने प्रति प्रेम और दूसरे के प्रति प्रेम विपरीत भावनाएं नहीं हैं। प्रेम अविभाज्य है, अर्थात् अलग नहीं है। प्रेम या तो है या तो नहीं है। ये नहीं कि ज़रा सा है, ज़रा सा नहीं है। कि यह यहाँ है यहाँ नहीं है। अगर हम आकर्षण के भी सिद्धान्त को लें तो कह सकते हैं कि जहां हम खुशी और प्रसन्नता चाहेंगे तो निश्चित रूप से वहां प्रेम होगा और जब प्रेम होगा तो वह दूसरों के पास स्वत: पहुंचेगा।

किसी भी व्यक्ति को भी प्रेम करना अर्थात् समस्त सृष्टि को प्रेम करना। यहां 'करना' शब्द किसी कार्य का सूचक नहीं है, बल्कि 'होना' शब्द होना चाहिए। कहने का भाव यह है कि करते निःसंदेह आप ही हो, परंतु यह होता स्वयं है। इसका विस्तार यदि हम देखें तो कह सकते हैं कि आत्मा अपने आप में सम्पूर्ण प्रेम स्वरूप ही है। उसे प्रेम करने के लिए किसी वस्तु या किसी व्यक्ति या किसी ऑब्जेक्ट की ज़रूरत नहीं है। यहाँ यह बात समझ लेना ज़रूरी है कि आत्मप्रेम और स्वार्थ दो अलग-अलग चीज़े हैं। स्वार्थ शारीरिक स्तर तक ही सीमित है, इसलिए स्वार्थी व्यक्ति - शेष पेज 11 पर



ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

**खुद को प्रेम करना यहां बुरा समझा जाता है और लोग इसे आत्म-मुग्धता की संज्ञा देते हैं। याद रखने वाली बात यह है कि हम दूसरे को, सृष्टि को सिर्फ अपनी रोशनी में ही देखने में समर्थ हैं। अपने प्रति प्रेम और दूसरे के प्रति प्रेम विपरीत भावनाएं नहीं हैं। प्रेम अविभाज्य है, अर्थात् अलग नहीं है। प्रेम या तो है या तो नहीं है। ये नहीं कि ज़रा सा है, ज़रा सा नहीं है। कि यह यहाँ है यहाँ नहीं है।**

7 कदम राजयोग की ओर.....

## मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य



**प्रश्न:–** मैं एक डायरेक्ट प्रश्न आपसे पूछता हूँ - क्या आपने भगवान को देखा है?

**उत्तर:–** हम भी डायरेक्ट उत्तर दे रहे हैं..हाँ...एक बार नहीं बार-बार और उनसे ऐसा दिव्य नेत्र भी प्राप्त कर लिया है कि जब चाहे उन्हें देख लें और केवल देखा ही नहीं बल्कि उनसे नाता भी जुड़ गया। हम अति समीप हो गये, वो हमारा हो गया। वो हमारा परम मित्र बन गया। यदि आप चाहें तो हम आपका भी उनसे दिव्य मिलन करा सकते हैं।

**प्रश्न:–** आप लोग सन्त-महात्माओं का सम्मेलन रखते हो। परन्तु ये तो कभी आपस में मिलते नहीं। इन सबकी विचारधाराएं अलग-अलग हैं, इनसे आप क्या अपेक्षाएं रख सकते हैं? वे संसार को कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हैं।

**उत्तर:–** नहीं बन्धु...जो सन्त हैं वे अवश्य ही सांसारिक लोगों से श्रेष्ठ हैं। यह हो सकता है कि वे आपकी अपेक्षाओं पर खरे न उतरते हों परन्तु हैं तो वे महान ही। जिन्होंने थोड़ी भी पवित्रता अपनाई हो वे महान हैं। फिर उनका त्याग भी तो है। विचारों में मतभेद हो सकता है, परन्तु हमें उन्हें ईश्वरीय संदेश भी देना होता है। हमारा लक्ष्य ये भी है कि जिस लक्ष्य हेतु उन्होंने त्याग किया है उस परमात्म-मिलन की विधि वे परमात्म-ज्ञान द्वारा प्राप्त कर सकें। साथ-साथ इस महान ईश्वरीय कार्य में वे हमारे सहयोगी भी हैं व बन भी जाते हैं। हमें किसी की भी कमी नहीं देखना है, हमें तो उन्हें और ही समीप लाना है।

**प्रश्न:–** आपके पास इतने सन्त आये, उनमें से कितनों ने भगवान को पहचाना...? मुझे तो नहीं लगता कि ऐसा कुछ हुआ है क्योंकि इन विद्वानों में अहम् बहुत होता है।

**उत्तर:–** आबू पावन तीर्थ एक ऐसी दिव्य भूमि है जहां आकर सभी का अहं समाप्त हो जाता है। हमें एक भी संत से ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उनमें अहं है। यहां हमने सभी को दिव्य व सौम्य स्वरूप में ही देखा। यहां उनके चेहरों पर शान्ति थी, प्रेम था, अपनत्व का भाव था व आनंद था। उनके कानों में ये महावाक्य पड़े कि ये ईश्वरीय कार्य मनुष्यों द्वारा संचालित नहीं है। उन्होंने सुना कि ब्रह्मा बाबा के तन में स्वयं निराकार, ज्ञान सागर, महाज्योति परम-सत्ता, परम आत्मा ने प्रवेश करके ज्ञान दिया था। वही ज्ञान यहां दिया जा रहा है। यह जानकर कि अब भी उनका अवतरण होता है, उनमें से कइयों ने उनका प्रत्यक्ष स्वरूप देखने की सच्चे दिल से इच्छा व्यक्त की।

**प्रश्न:–** मुझे आपका ज्ञान व आपका कार्य बहुत अच्छा लगता है। परन्तु अब तक भी ये विश्वास नहीं होता कि आप सभी पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं। क्योंकि पवित्रता की धारणा तो अति कठिन है। बड़े-बड़े महात्मा भी इसमें फेल हो जाते हैं।

**उत्तर:–** आपने सत्य कहा कि पवित्रता की धारणा कठिन है। हम भी यही समझते थे। परन्तु जब मनुष्य को अपने स्वरूप का सत्य ज्ञान हो जाता है, जब उसे अपने आदि देव-स्वरूप की अनुभूति हो जाती है तथा जब मनुष्य का बुद्धियोग पतित-पावन, पवित्रता के सागर परमात्मा से जुड़ जाता है तब पवित्रता जीवन के लिए वरदान बन जाती है। यही हुआ है ब्रह्माकुमार-कुमारियों के साथ। यहां का आधार ही पवित्रता है। बिना इसके कोई ब्रह्मा-वत्स भी नहीं कहला सकता, बिना पवित्रता के कोई योगी भी नहीं बन सकता। प्यारे बन्धु, आपको यहां की पवित्रता पर तब विश्वास हो जाएगा जब आप स्वयं इस मार्ग पर अग्रसर होंगे। इस पवित्रता के पीछे परमात्म-शक्ति कार्य कर रही है। क्योंकि अब उसे इस सारे संसार को पवित्र बनाना है।

**प्रश्न:–** प्रत्यक्षता का क्या अर्थ है? बाबा हमेशा प्रत्यक्षता शब्द का उपयोग करते हैं, प्रत्यक्षता कैसे होगी, यह भी बताएं।

**उत्तर:–** प्रत्यक्षता का अर्थ है - आये हुए शिव बाबा को सभी जान लेंगे और स्वीकार कर लेंगे कि वह मेरा है। परन्तु शिव बाबा की यह प्रत्यक्षता एकदम अंत में होगी। उससे पूर्व प्रत्यक्ष होंगे अष्ट रत्न, विजयी रत्न अर्थात इष्ट देव-देवियां। साथ ही साथ सम्पूर्ण सत्य परमात्म-ज्ञान भी प्रत्यक्ष होगा अर्थात् सभी उसे स्वीकार कर लेंगे। इसे ही बाबा कहते हैं कि विश्व-नाटक के सभी हीरो एक्टर स्टेज पर आ जाएंगे अर्थात् सभी जान लेंगे कि कौन क्या है। जहां-तहां बाप समान स्थिति में स्थित हुई आत्माओं के साक्षात्कार होंगे। विजयी रत्नों में पहली पच्चीस आत्माएं विशेष रूप से प्रख्यात होंगी। कहीं उनसे दुर्गा के साक्षात्कार होंगे तो कहीं अम्बा, काली, सरस्वती, गायत्री आदि देवियों के। किसी के मस्तक में चमकती हुई ज्योति दिखाई देगी तो किसी के साथ महाज्योति। तब ज्ञान-योग पांच-दस मिनट में ही सिखा दिया जाएगा। इस तरह होगी जयजयकार। आप यदि प्रत्यक्षता में मुख्य पार्ट बजाना चाहते हैं तो स्वमान में स्थित होकर महान योगी बनें।

**प्रश्न:–** मुझे मनन करना बिल्कुल नहीं आता। परन्तु बाबा मननशक्ति बढ़ाने को कहते हैं। मैं क्या करूं जो इस सब्जेक्ट में भी आगे बढ़ सकूं?

**उत्तर:–** ज्ञान मनन अति आवश्यक है। क्योंकि मनन से ही ज्ञान बल के रूप में काम करता है। ज्ञान जब तक बल न बने तब तक जीवन निर्विघ्न नहीं बन सकता और न ही स्थिति योग-युक्त बन सकती। ज्ञान मनन के लिए ज्ञान-दान करो। ज्ञान देना है तो मनन अवश्य करेंगे। मनन शक्ति सबके पास है परन्तु जो व्यर्थ का मनन ज़्यादा करते हैं, वे ज्ञान-मनन नहीं कर पाते। देख लो यदि कोई आपको बुरे शब्द बोल दे तो आप उसका कितना मनन करते हैं। मनन शक्ति बढ़ाने के लिए अन्तर्मुखी होना आवश्यक है। बाह्यमुखी कभी मनन नहीं कर सकते। दूसरी बात -कुछ ज्ञान की प्वाइंट्स को स्मृति में रखो तो मनन होता रहेगा। एक टॉपिक लेकर उस पर लिखो। उदाहरण -'आत्मा के बारे में हम क्या जानते हैं, परमात्मा के बारे में हम क्या जानते हैं,' आदि...।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com